रसूलुल्लाह ﷺ का तज़किरा

मौलाना ज़ुल्फिकार अहमद नक्शबंदी (दब)

ये PDF ग्रामर या कोई भाषा का अदब नहीं है

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

| रसूलुल्लाह ﷺ का तज़किरा

रबीउल अव्वल के महीने के हवाले से हज़रत मुहम्मद ﷺ के इश्क व मुहब्बत के बारे में कुछ बाते अर्ज़ करनी है, बुज़ुर्गो का मकुला है जो जिस्से मुहब्बत करता है अक्सर उस्का तज़किरा करता है, इसलिए ये कुछ बाते इसी सिलसिले की एक कडी है.

रसूलुल्लाह ﷺ का ज़िक्रे मुबारक तो खुद अल्लाह रब्बुलइज्जत ने कुरान पाक में बार-बार किया, जिस जाते मुबारक पर अल्लाह तआला ने खुद कस्मे खायी, उन्की ज़ुलफो की, उन्की उम्र की और उन्के शहर की और इर्शाद फरमाया हमने आपका ज़िक्र बुलंद कर दिया, में आजिज़ बन्दा इस पर क्या अर्ज़ कर सकता हूं, उन्का तो वह मुकाम है की अदब से ज़बान गूंगी हो जाती है, फिर भी किसी गुलाम के लिए अपने आका का ज़िक्रे मुबारक एक सआदत होती है और इन सआदत बन्दों की फहरिस्त में शामिल होने की हर मोमिन के दिल में तमन्ना होती है.

दुनिया में बडे-बडे रहनुमा, जरनैल, फिलोसफर और खतीब गुजरे है, उन्की ज़िन्दगियो को देखा जाए तो सबकी ज़िन्दगी में एक बात एक जैसी नज़र आती है की उन्की वफात के बाद लोगों ने कहा मरहूम ने बहुत कुछ किया मगर ज़िन्दगी ने वफा न की, अगर ज़िन्दगी वफा करती तो वह इस फन को और उरूज पर पहुंचाते, बडे-बडे शायर गुज़रे, उन्की वफात के बाद भी लोगों ने लिखा की बडे अच्छे शेर कहे अगर ज़िन्दगी वफा करती तो वह और अच्छे शेर कह लेता, बडे-बडे जरनैलो की ज़िन्दगियो को पढा तो उस्मे भी नज़र आता है की लोगों ने कहा की अगर वह इतने साल और ज़िन्दा रहता तो वह पूरी दुनिया का फातेह बन जाता.

गोया फिलोसफर, अदीबो, जरनैलो और खतीबों की ज़िन्दगियो को देखा जाए तो यह तमाम ज़िन्दगिया ना-मुकम्मिल नज़र आती है. लोग कहते है की अगर ज़िन्दगी वफा करती तो अपने अन्दर कमालात पैदा कर लेते.

पूरी काएनात के अन्दर सिर्फ एक हस्ती ऐसी है की जिसने अपने होश व हवास में दिन के वक्त में अपने तअल्लुक वालो की महफिल में खडे होकर यह

ऐलान किया की ऐ लोगों दुनिया में जिस मकसद के लिए मुझे भेजा गया था में उस मकसद को पूरा कर चुका हूं, लोगों ने कहा आपने सच फरमाया, आपने उंगली का इशारा करते हुए फरमाया ऐ अल्लाह तू गवाह रहना.

यह रसूलुल्लाहﷺ का ऐसा कमाल है की आपके इस कमाल में कोई शरीक हो ही नहीं सकता, ऐसी कमाल वाली ज़िन्दगी रसूलुल्लाहﷺ को अल्लाह तआला ने अता फरमाई थी.

हम ने यूरोप, अफ्रीका और अमरीका में लोगों के सामने यही पोइंट रखा की लोगों तुम अपनी ज़िन्दगी में जिन को लीडर मानते हो, उन्की ज़िन्दगियो में ऐसे-ऐसे नुक्स है लेकिन जिनको हम अपनी ज़िन्दगी में रहनुमा मानते है, तुम उन्की पूरी ज़िन्दगी में किसी बात पर भी उंगली नहीं उठा सकते, यह एक ऐसा मज़बूत नुक्ता है की बडे से बडे मुखालिफ को भी घुटने टेकने पड जाते है.

रसूलुल्लाहﷺ की ज़िन्दगी का हर पहलू एक उनवान है, किताबें भरती चली जाएंगी मगर किसी एक उनवान का हक अदा न होगा, उम्मत चौदह सौ साल से अपने महबूब की सीरत पर किताबें लिख रही है मगर आज तक भी कोई वह न कह पाया की

हमने इस सीरत को लिखने का हक अदा कर दिया.

| रसूलुल्लाह ﷺ की मुहब्बत

रसूलुल्लाहﷺ के साथ मुहब्बत व इश्क रखने वाले हज़रात तो इस दुनिया में करोडो गुजरे है. हर वह आदमी जिसने कलिमा पढा है, उस्के दिल में रसूलुल्लाहﷺ की सच्ची मुहब्बत का होना ज़रूरी है. हज़रत मुहम्मदﷺ की मुहब्बत दीन हक की शर्त अव्वल है अगर इस्मे खामी रहे तो ईमान नामुकम्मल है.

हज़रत मिरज़ा मज़हर जाने जाना (रह) एक बडे वली गुज़रे है. उन्होंने फारसी में नीचे लिखे शेर लिखे तर्जुमा - अल्लाह तआला हमारी हम्द के इंतिज़ार में नहीं है और हज़रत मुहम्मदﷺ हमारी तारीफ के मुन्तज़िर नहीं है. अल्लाह तआला रसूलुल्लाहﷺ की तारीफ के लिए काफी है और हज़रत मुहम्मदﷺ अल्लाह तआला की हम्द बयान करने के लिए काफी है. फरमाते है तुमने अपनी कोई दरख्वास्त पेश भी करनी है तो एक शेर के जरिए पेश कर दो की ऐ अल्लाह हम आप से रसूलुल्लाहﷺ की मुहब्बत मांगते है और ऐ अल्लाह के नबीﷺ हम आपसे अल्लाह तआला का ताल्लुकात चाहते है.

लिहाज़ा इश्के मुस्तुफाﷺ तो ईमान वालो के लिए

ज़िन्दगी का सरमाया है.

इश्क की ये बाते सब ऐसी है की मुस्तकिल एक उनवान है. फिर भी कुछ बाते इश्क व मुहब्बत की जो हर सालिक के लिए ज़रूरी है ताकि जो सालिकीन जिक्र व सुलूक में कदम आगे बढाने वाले है वे इन बडो की बातो को सामने रखकर अपने आपको भी देखें की क्या आज इस इश्क की कोई रमक हमारे अन्दर भी मौजूद है. कितना हिस्सा इस्का हमे हासिल है और कितना हमे और हासिल करने की ज़रूरत है.

खुतबात जुल्फकार फकीर हिन्दी/2 [१२४-१२७] मजमून का खुलासा